

नं. १०६

म. ग्रं. सं. ठाणे

विषय

नाटक

संग्रहालय क्रमांक

८६६
८६५

लेखक

वि. सं. मूरकर

पुस्तकाचें नांव

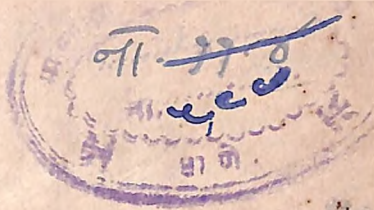
टिपु सुलतानाचा फारस

सन

१९६२

१०६

नाटक



५५५



लेखक
विठ्ठल संभाजी मूरवार
सन १८९२

दिनांक २ भागे

हास्यरसमालिका.

पुष्प ७ वें.

टिपूसुलतानाचा फार्स.

प्रवेश १ ला. स्थळ—दरवार.

पात्रें—टिपूसुलतान व दरवारी लोक.

[तत्कावर टिपूसुलतान वसला आहे व दरवारी लोक आपापल्या जाग्यावर सलाम करण्याकरितां उभे आहेत, तों पडदा उघडतो व भालदार पुकारतो.]

भालदार—दौलत तुंबर बहडती हुवे मेहेरवान सलामत, आफताप और महीताप जबतख चले तबतख हुजूरकी जिंदगी सलामत रहे, रयत खुशीसे चले और हुजूरके दुष्मनका पायमाल हो जावे. मेहेरवान सलाम दौलत ज्यादा सलामपर सलाम निगापर निगाकिजीये मेहेरवान.

(सर्व अमीर—उमराव सलाम करितात.) तब मज-

टिपूसुलतान०—खुदाताला सलामत नान तख्खी सब सरदार लोग. (सर्व वसतात.) से रातोदीन चलना,

टिपु०—वज़ीर, सब अमीर, उमराव, हाकम, छोटे बड़े हुद्देदार आपआपने जग्गोपर हाजर है या नहीं ?

वज़ीर—खुदावंत, हुज़ूर पूरनूर, सब छोटे बड़े सरदार आपआपने जग्गोपर हाज़ीर होके हुज़ूरसे हुक्म क्या फर्माया जाता है वह सुनके नौकरी उठानेवास्ते हाजर है.

टिपु०—बहोतही अच्छा है. (कांहीं थांबून) सुनये सब सलतनदकी कारवाई चलनेवाले आपहो. देखिये के ये सब जिंदगी जिस इनसानने जब कमाया तब तो लाखो करोडो आदमीकी जान कत्तल करके शिकस्तीसे जमाया, और दुनियामें अपने बहादुरीका नामनिशान फैलाया, और नेकवक्तीसे तक्तका कारोवार चलाया, वही तक्त हाल हम चलाते है. शायद खुदा तालाकी कुदरत ये है के जिस सलतनद कमानेको करोडो मर्दकी जान खैरात होगई, उसीको गमानेको एक घडी न पाव पलख लगेगा. वास्ते बार बार आपको यह कहेना है के आप हुशारीसे रहना और सब रयतलंगोकु खुशीसे खना जरूर है. तो मुझे चाहताहूं के रियाशत किस है.

खुदावंत, गरिबन्नवाज, हुज़ूर पूरनूर आपके कारवाई बहोतही अच्छी तोहोरसे चली है

५ १११०९

के, जैसे किबले गाहा आगर्च किबले गाहीं अपने लर-
केपर प्यार करते है वैसे आपके रियासतके रहिनेवाले
इनसानपर आप मेहेर नजर करके उनका पाला पनोसा
करते हो इसिसे ओ लोग बडे चैनचानसे गुजरान करते
है. अपने राजमें रयत आबाद, खजाना भरा हुवा, ल-
प्कर मगन, गरीबगुरिवां अमनचमनसे गुजरान करते है
और खुशीसे रहते है, चोर चकार, जेब कतरू, उठा-
यगीर, दगाबाज इनका नाम नहीं. रहांगीर हातमें सुन्ना
उछालते चले जाते है, मै अपने जुबानसे क्याकहूं. नेव-
ल्ला और साप एक जगे रहते है वैसी आपकी खोप है.

टिपु०—सुनिये सेनाध्यक्ष, अपने रियासतमे जो कुच
खांस और आम लोग रहते है उनकुं जो कानुन मुकर
किया गया है बमुजफ उसीके चलके नेकनामी कमाते है
या नहीं?

सेनाध्यक्ष—हुजूर पूरनूर आपके रियासतमें जो कुच
खांस और आम लोग रहते है उन सबोंकु अपना धरम
जानसे प्यारहै, कुई दौत मंदा आदमी होय अगर मौता-
ज आदमी होय इन सबोंने खुदातालाके परशीतिशमें मज-
गूल रहिना और पातशहाके नेककेवास्ते जान तख्वही
वहां गमाना, शायद अपने मजहबसे रातोदीन चलना,

ये सब बातोंमें और तो क्या कहूँ मगर खुदाके पाससे जानसे प्यार है। उसी तन्हासे सब मन, सब गार, कदेमी, और हालके यही रहासे चलते हैं और किसम किसमके आदमी बदस्तूर चलते हैं आप बेफिकर होना।

टिपु०—सुन वज़ीर, मुरादये इलाही कर्तारकी खबगी है, इनसान पहिले इलाहीकेपास क्या मंगता है; ये खुदा, मेरी मौताजी दूर कर, और अनाज और कपडेके वास्ते मुझे दूसरेका घर मत बताव. जिस्कूं खुदाने खाना पीना दिया है, वो सहुकार होने चाहता है. सावकार होके अमीर या उमराव, छोटासा राजा; दुसरेको नालबंदीन देनें लगे, इसीवास्ते रातोदीन खस्त करता है. तो हरवक्त मुरादियोंको खैर खैरात करतेहो या नहीं? तखलीपूसे दुष्मनी तो नहीं होती.

वज़ीर—ये बात सच है सरकार, मगर मुराद दो तन्होंकी रहती है. “ एक अच्छी, और एक बुरी, उन्मेसे अच्छी मुराद पकडके जो आदमी काम करते हैं उसकी अछातालाके मेहेरसे बढती होती है. और बुरी मुराद रखनेवाले सोचके दर्यावमे डुब जातेहैं. मैं तो हिमतसे कहताहूँ के, आपके रियाशतपर जो कुई हछा करेगा उसके जान बचनेके दीन होगये और उसकी कल-

खं मकानकी मुराद होरही ऐसा बेशक समजना. क्यौंके आपकी नियत जो अच्छी होय, तो पाकबिनीआज आपको जस क्यौं न देगा.

टिपु०—सुनिये फौजबक्ष, पातशहाकी दौलत फौज है. तो फौजका इतेहान किस वझे रखदिया है.

फौज०—खुदावंत, पुस्त बपुस्त ये कामपर हमको मुकर्र किया है, और आपके कदम हमारे सीरपे है; मगर ये काममें धुंद और सुस्त रहिना ये बंदेकु अच्छा नहीं. क्यौंके आफताप और महिताब कीये जिस शकसने वो रुसवाई करे खांक जैसी आंख करे घांस पातशहाके इनायतसे खांससे पीरमर्द याने हमेशा बूढ़े आदमी तख इस तरकीबसे राजी रखताहूं के, मुनासोद मुसिवतकी और उन लोगोंकी नहो सकती है.

टिपु०—सुनिये दिवान, ये दरबारका हाल सुनतेही दिख निहायत खूष हुवा. वैसी जो मेरे दरबारकी एकी रहे तो मेरे इत्तेजानके तर्फ आफताप और महिताप भी आंख उठाकर देख नसके तो दुष्मनकी क्या मगदूरहै.

बझीर०—एँ अजीज पातशहा सरकार, आपसरीखे अकलमंद आदमी तो दुनियाके फानीमे मेरे नजर नै आता. ऐसा होके आपका हुकूम कौन तोडेगा. आप तां

गद्दीके मालक हो, और रियाशतके पालनवाले हो. मूसे क्या कहूं. मगर रियाशत तो आपसे इलाहिके पास यही दुवा चाहते हैं के—ऐ परबरदिगार, पातशहा सरकारकी गद्दी कायम रहिना.

टिपु०—वझीर, सब अमीरोंकी हुशारी और नेकवक्ती देखके दिल खूष होता है. खैर मगर बडी अफसोसी दिलमे यह पैदा होती है के, इतना कारोवार मैं अपने अकलमंदीसे चलाताहूं लेकीन पुनेकी गद्दी चलानेवाले जो पेसवे हैं, उनके उप्पर मेरा कुच बस याने अमल चलता नहीं. क्या करे वझीर, दिल तो यह चाहता है के पेसवे उप्पर हज्जा करके उस्कु दुनियामेसे नेस नाबूद करना; मगर क्यां करे, पेसवेके तर्फ जो नानाफडनवीस कहते ओ आदमी बडा अकलमंद है. क्या उस्की अकलकी तारीफ और सिताफी कहना! एक दीन मैंने दिलमे यह बात लारीके उस्की अकल देखना वास्ते एक सांडणी स्वारके पाससे उस फडणीसके तर्फ कच्चे चने नजरानेखातर भेज दिये. मेरा मतलब उस्में यहथा के—देख नाना तूं बडा अकलमंद आदमी है. लेकीन मैंने जैसे तुझे कच्चे चने नजराने खातर भेज दिये, वैसे तेरे सब रियाशतके रहिनेवाले इनसानकूं जो चने न खिलाऊं तो मेरा

नाम टिपू नहीं ” मगर उस फडणीसने मुझे कैसी अपनी सिताफी दिखाई के वोही चने भूजके मेरेतर्फ भेज दिया और ऐसा सुनाया के देख टिपू, ये चने जैसे भूजके मैंने भेज दिये उसीमाफक तेरे सब रियासतके इन सानकूँ और तेरे फौजकूँ भूज भूजके जो उसकी जान न लेवूँ तो मेरा नामही नाना नहीं. देख वज़ीर ऐसे ऐसे नेकबक्त, चालाख, और हुशार आदमी पेसवेके पल्लवमे रहते है, के जिस्के अक्लकी तारीफ मुझे कहा नहीं जाती. ऐसा होके हम लोगोंका बस उनको उपर कैसा चले ! यही फिकीरमे ये टिपू रातदीन फिकीरमंद होगया है.

वज़ीर—सरकार, फिकीर काहेकी. किताबमें लिखा है के “ दुदील्लयक्षवदवक्ष परागंद जीहरा यार दंबूहरा ” दो दिल एक हुवा तो बडा पहेडवी फुटा जाता है, बहुतसे चिञ्चोंसे बडा सापभी खेंचा जाता है, आपके सब रियासतकी और दरबारकी जो एकी कायम रहे तो पेसवेकी अपने आगे क्या अवकाद है. अपने दरबारमेभी ऐसे ऐसे समसेर बहादर सरदार हैं के एक हातसे लाखो आदमीकी रंडकी बनादेवे. ऐसा होके आप कहते होके मैं फिकीरमंद हूँ. ये बात आपको शरमाती है.

टिपू०—वज़ीर, आप कहते हो ये बात सच है. मगर

तखदीरके आगे तथवीर चलती नहीं। वास्ते दिल यह चाहता है—अपने जो दुश्मीन निजाम है उसके तर्फ अपना वकील जो पंडित गोपिनाथ है उसकु हैद्राबादमें भेज देना और उस निजामकु ऐसा सुनाना के मुलतान जो टिपू है ओ दुश्मनी छोडके अपनेकु मिलनेखातर आता है, और जाके उसकी मुलाकत लेना और दोमिलके उस पेसवेके उप्पर हल्ला करना. फेर अल्लाकी करामत क्या है सो देखलेना. लेकीन उसका पल्ला पोंहचाने बिगर रहनेका नहीं. उस पेसवेकोउप्पर गिह्ला करके जान गई तो बेहेत्तर है. इस बातमें तुमारी सल्ला कैसीहै.

वजीर—सरकार, इस बात मे तो हम लोक राजाहै. लेकीन जो कुच करना हं सो बिचारसे करना. क्योंके उस नादान निजामकी आप मुलाकत लेने चाहतेहो वास्ते कहता, हूं ये बंदा आपका ताबेदार है; जो हुकूम होगा उसीमाफक चलना ये मेरा अखत्यार है.

सर्व सरदार—सरकार, अपने जो इरादा दिलमें रखा है ओही अच्छा है. क्योंके आपके सलामतीमें हम सब गरिबोंकी सलामती है.

टिपु०—अच्छा तो वजीर, इसीवकथ गोपिनाथ पंडितकु दरबारमें बुलाना.

वकीर—अच्छा है. (असें ह्मणून सेवकाकडून वकी-
लास बोलावून आणतो.)

(वकील दरबारांत येऊन मुजरा करून उभा रहातो)

वकील—खांसाहेब, काय हुकूम आहे; बंदा हजीर
आहे. हुजुरांतून काय हुकूम होत आहे ?

टिपु०—पंडत, आप तो हुशार हो, और नेकवक्त
आदमीहो. मेरेसे आपकूं यह हुकूम फरमाया जाता है
के—हैद्राबादमें तक्त चलानवाला जो निजामअल्ली है उ-
स्के तर्फ जाके बकिलायत करके उस्कु ऐसा सुनाना के,
हैसूरका मुलतान टिपू दिलकी दुष्मनी छोडके आपकू
मिलनेखातर आता है. ए काम अभिके अभि होना चा-
हिये; खजानेमेसे सवारीका खर्चा लेना, और दो घडीके
अंदर यहांसे रवाना होना.

वकील—ठीक आहे सरकार, हुकमाप्रमाणें काम कर-
तों; पण येथून जायला आज अमावास्या, तर आजपासून
तीन दिवस ह्मणजे त्रितियेचे दिवशीं जाऊन पोचें.

टिपु०—क्यों पंडत, आंनस क्यां होती है, और आगे
तिति बांला य क्यां ?

वकी०—सरकार, आपल्यामधें तिसरी चांदरात्र बोल-
तात, त्यालाच आह्मी तृतिया बोलतो. त्या दिवशीं भी
तेथें जाऊन पोचें.

टिपु०—अच्छा, तो हम दूसरे चांदकूँ यहाँसे रवाना होंगे तो पांचवे चांद्ररातकूँ वहाँ बरोबर पोंचेंगे.

वकी०—ठीक आहे खांसाहेब, (मुजरा करतो)
येथून आतांच रवाना होतों. (वकील निघून जातो)

टिपु०—अच्छा दिवान, दरबार खलास करो. निमाज का वक्त होचुका; तो निमाज खानेमे चलो.

भालदार—दौलतजादा, सब सरकारके सलामपर निगाकिजिये मेहेरबान सलाम.

[पडदा पडतो.]

प्रवेश २ रा.

स्थल—हैद्राबाद शहर. [राजदरबार.]

(निजामअल्लीसह सर्व सरदार बसले असतां
पडदा उघडतो.)

छडीदार—निगेह रुबरू निगेरप्पर पादशहा, आपके शफ कवाईत मफत जिल्है इलाई खुदा करे, और हुजूर-को दुष्मनोंका पायमाल होजावे मेहेरबान सलामत. सब सरदारके सलामपर निगा कीजिये, दौलतजादा.



(सर्व सरदार बादशहास मुजरा करून जागच्याजार्गी उभे राहतात.)

निजामअल्ली—खैर खुदाकरे. बैठिये सब जवान.

[सर्व सरदार आपापल्या जाग्यावर बसतात.]

निजाम०—सुन वजीर, जिस वरुत आदमी मैयांके पेटसे इस दुनियादारीकी मजा देखनेकेवास्ते पैदा होताहै तब अपने साथ क्यां लेके आताहै ? नेकि और बदि, याने मलाई या बुराई. तो मेरे माबापका डंका इस घर-तिके उप्पर चल रहे और आगेभि चले. वास्ते राजोमे क्या लिखा है, सब रियाशतमे कारवाई चलानेवाला एक वझीर. तो वझीर, खानदानका बंदोबस्त किसवझे रखा है ये मै सुनने चाहताहूं.

वझीर—हुजूर पूरनूर, खान दानका बंदोबस्त हातल इनखान कम हक्क-कू रखा है.

निजाम०—ए महंमद, आपने खानदानमे जो खास और आम लोक है इनका बंदोबस्त किस तन्हांसे रख दिया है.

महंमद—आये अजिज पादशहा सरकार, आपने कानुननें जैसा हुक्म फरमाया है उसि मुआफिक उनका बंदोबस्त रखा है. कभि गलिम रातकू यकायक आन

पोंहचा तोभि अपने रियातमेका एकहि संग न लैसकै
तो फेर और चीज कांहांसे ले सकेंगा.

निजाम—वझीर, हवालत खानेका बंदोबस्त कैसा
रखा है.

वझीर—सुनिये सरकार, हवालत खानेमें डाले जो बद-
माश लोग है उनकूं कखट्टा करके जिन्हामें डाल
देतां हूं. कयंवके बे अगर एक दफे छुटातो नांदानके
मुआफिक सीर्फ जरीबानीपर उनकु छोडता नही.

महंमद—सरकार कयां ताजुवाकि बात है. लोक बडे
दिवाने है, उसमे कुच शक नहिं. कयोंके एकके हातसे
गुन्हा होके उसकू ब कायदा जुरिवाना होता है. अगर
वह इनसांन सजा पाता है. ये गुन्हेगारोंके हाल आं-
खोंसे देखख फिर आपभि वो काम करनेकु राजी होता
है. मै ऐसा जानताहूंके ये सब कुदरत कारसाज कि है.
उसमें आदमिके तरफ कुच नही.

निजाम०—सुनिये वझीर, मक्के, मदिने, जानेवाले फ-
किरोंकू किसी बातकि तख्वालिप न होना चाहिये. वास्ते
जगे ब जगे चौकी दरोगा, वहपे कुलिद, शहागिर्द, मु-
क्रर करनेके वास्ते हुक्म फरमायाथा इसका बंदोबस्त
कैसा कयां रखा है, ये मै सुन्ने चाहतां हूं. बयान कीजिये.

बाजिर-खाविंद, जिनके उनके मजाहब मुजवजाय ब-
जाय हरएक जगे मुसाफिरखान बंधे है और औरतो-
के वास्ते जुदे बंधे है. वहां शिवाय उनके दुरास्तिके
वास्ते सिपाई विगेरे कुच हरकत नही जो आदमी गुरु-
तल किनसे दूसरेका हातका अनाज खाते नहीं, उनके
वास्ते सदावरत बंधे हैं आप बे फिकिर रहेना.

निजाम०—मुन फौजबक्ष, अपने तांबेमे फौज कितनी
है और कौन कौनसे लढनेके काममे तैयार है ?

फौजबक्ष०—खुदावंत आपके कदमके मेहरबानीसे
फौज बहोत रखि है. उनकि बयान जो मै यहां कहूं तो
बरूत पूरा न होगा. लेकिन अर्ज करताहूं, खाविंदने
ख्याल रकना. जो हुन्नर लडाईके काम जरूर है सोमें
सब लोक खूब जानते है. गोलंदाज तोफ डामनेमें इतने
हुशार है के गोलैका मार बिजलीके माफक एकके पीछे
एक हो रहेता हैं. और समसेरबहादर तो ऐसे रहेते,
के एक हाथसे कहेक आदमीके छिलटे छिलटे उडादते
हैं. वो लोक दांड, इटा पट्टा, बोथाटी, छूरी, तमंचा, घोप
माडू, मुसल, गदा इस इल्मोंमें वाकिफगार हैं, और ग-
लिमकी रहा देखते हैं. गलीम आतेही उस्कूं नेसनाबूझ
करनेकेवास्ते हाजीर हैं.

निजाम०—खैर बैठिये वझीर. बच्चेपनसे यह रियाशतके कारवार चलाते ये निजाम बुढ़ा हो गया. अच्छा तालाके मेहेरसे आजदीन तख् मुझे किसी दुष्मीनने न सताया, और न तेढी नजरसे देखा. जो जो सुलतान गद्दीका मालिक हौके पातशहा होगया वो सब मुझे चोथाइ देता रहा. पुनेकी गद्दी चलानेवाला वो पहिला बाजीराव, ओमी अपने मूसे कहताथाके “ दुनियामे पातशहा निजाम ” “ नैतो और ही सब गद्दी चलाते हैं, लेकिन सब ही हजाम ” मगर सरदार लोग, कहनेमें हासल ये है के हालमेरी ये नाउमेदी देखके दुष्मिन टिपु मुझे बहोत सताने लगा. अच्छा वो ज्यानता होगा के अब ये निजाम बुढ़ा हुवा; मुछीके काले बाल सुफेत होगये. अब उसके आंगमे ताकद नही. लेकिन वो समझता नहीके, जिस निजामने आपने समसेरीसे लाख्खो आदमीका लोह गिराया उसके आगे टिपूसरीखे विछीकी क्या बिसाद हैं.अच्छा वख्तपडे तब उस्कोभी समझादेगा.

(इतक्यांत टिपूकडील वकील येतो.)

वकील—सुलतान साहेबाची नोकरी करणें ह्यणजे एक पांच मणाची दगड उचलून डोकीवर घेणें होय. परंतु करतां काय ? “ पोट लागलें पाठीशीं हिंडवितें

देशीदेशी " ह्या कवीच्या उक्तीप्रमाणें येईल तो प्रसंग भोगला पाहिजे. काम थोडेंच असायचें परंतु हाक मारल्याबरोबर लवून मुजरा करतां करतां कंबर मात्र मोडून जाते. असो, निजामसोहबाच्या राज्यांत तर आलों. सरकारी कामाचें ओझे डोकीवर ठेऊन कांहीं उपयोग नाही, तें अगोदर उतरून मार कमी करावा. आर्षी सरकार दरबारांत जावें. आणि मग स्वस्ततेनें कोणताही उद्योग करावा. (असें ह्मणून जरा पुढें येऊन द्वारपालास)

वकील०—सरकारानां वरदी दे कीं टिपुसुलतानाकडून वकील आला आहे, आंत येण्यास परवानगी असावी.

छडीदार—अच्छा है खडे रहो, इतल्ला पोहोंचाताहूं. (असें ह्मणून दरबारांत येऊन) हुजूर बंदेकी बंदगी आती है.

वजीर०—क्यों छडीदार, क्या हवाल है ?

छडीदार—हुजूर, टिपुसुलतानके तर्फसे कुई वकील आये है.

निजा०—जा उसकूं दरबारमें लेआ. (छडीदार जातो.)

[गोपीनाथ वकील दरबारांत येऊन मुजरा करतो.]

निजा०—आईये पंडत, बैठिये.

वजीर०—आईये वकील साहेब बैठिये. तुम आनेसे

निहायत हम लोगोंसे खुशी पैदा होती है. क्यों खुष मिजाजमेतो हो.

वकील—हैं काय विचारावें हुजूर. आपल्या मिजाज्जित आमच्या गरीब लोकांची ही मिजाज आहेच.

निजा०—क्यों पंडत, दुष्मन टिपु बाल बच्चेसे खुशी-मेतो है?

व०—होय सरकार, ह्मणलें तर दुष्मन नाही तर तोनि आपण एकच आहां; पण हे मनाचे धर्म आहेत.

निजा०—क्यों पंडत, मुशाफरीकी तखलीप सीरपे लेके मेरे दरबारमें आनैका सबब क्या है?

वकी०—सरकार, आमचे हजुरांतून ह्मणजे सुलतान साहेबांकडून आपल्याकडे कांहीं कामासंबंधी जाण्याचा हुकूम झाला ह्मणून येण्याचें काम पडलें. खांसाहेब, मी आहे त्यांचा वकील; तेव्हां राज्यसंबंधी दान गोष्टी बोलण्याचें त्यांणीं मजकडे सोंपविलें आहे. तेव्हां मी जें बोलणार त्याला आपली परवानगी आणि कान दरकती असली पाहिजे. मी येण्याचा मतलब सांगणारच पण हुकुमाप्रमाणें.

नि०—अच्छा वकील, बकिलायत करनेकूं तुम आये हो ? बहोतही अच्छा. तुमारा यानें सुलतान टिपुका कहना क्या है सो बिना फरक बयान करा.

वकील—सरकार, आमचें ह्मणणें कांहीं महत्वाचें आहें असें नाहीं. बरें, विचार करून पाहिलें तर त्यांत उभयतांनाही मोठें अवघड वाटण्यासारखें आहे. परंतु जर वाट चांगली दिसत आहे, तर काव्याकुव्यांतून जाऊन पायाला इजा करून घेणें हें फारच वाईट आहे. याचा विचार सरकार आपल्या पोक्त आणि प्रौढ बुद्धीनें करतीलच. ह्यांत मला सांगण्याचें कारण नाहीं. तेव्हां आमच्या खासोहवांचें ह्मणणें असें आहे कीं, तुमचें आमचें वैर नसावें. कारण पूर्वीचे दिवस आतां राहिले नाहींत. आजपर्यंत जरी त्यांचा आपला कलह होत होता तरी तो एकअर्थी पाहूं गेलें तर कांहीं नुकसान करणारा नव्हता. परंतु आतां असलेला तंटा तोव्याला कारण होत आहे. तेव्हां नुकसान न होता देशाची खराबी न व्हावी आणि उभयतांनीं एकोप्यानें असावें हाच माझा येण्याचा हेतू. या उपर हुजूर काय ह्मणतात तें ऐकून वेण्याला मी तयार आहे.

निजा०—पंडत, तुम वकिलायत करनेकूं आये हो. तुमारी दिलकी मुराद तो सुनलिया. अब तुमारे साथ बात करना ये मुझे अच्छा नहीं; वास्ते सब सरदार बैठे हैं उनके साथ तुम बात करो. फक्त आखरका जबाब मैं देउंगा.

वजी०—पंडत, मुलतान टिपु जो है वो बडा अकल-मंद आदमी है, और बडा हुशार है. ऐसा होके तुम कहते हो, दोनोंकी एकी करनेके वास्ते मुझे भेज दिया है; तो इस्मे कुच तोभी मतलब होना जरूर है. वास्ते पहिले तुम ये कहेना के, ऐसा करनेमें क्या हांसल है मला ?

वकी०—तीं कारणें अनेक आहेत, तीं सांगण्याला फारच वेळ लागेल; त्यांतून कांहीं सांगतां. पहिलें कारण हें कीं, स्वजातींत वैर असणें हें लोकांत मोठें लांछन आहे. एकी असल्याच्या योगानें जे मांठमोठे फायदे होतात व देशकल्याण होऊन शांतता होते. तसेंच वैरानें नानाप्रकारचे तोटे होऊन नुकसानी होते ती न व्हावी हाच त्यांच्या मनाचा उद्देश असावा. याच्याहूनही एक निराळें कारण आहे, परंतु तें सरकारच्या मनांत रात्रंदिवस येत असेल; तेव्हां तें मला सांगण्याची गरज आहे असें नाहीं.

वजी०—पंडत, आपका कहेना बराबर है. मगर रुयाल करना जरूर है के, इनसानका मतलब क्या है. मुलतान टिपु जो है सो बडा मतलबी आदमी है. सगा होके दगा कैसा देना ये बात उनके दिलमें न आती.

वास्ते बिछीनें चुवेसे दोस्ती करना और सेरनें बकरीसें मछा करना इस बातमें जो हांसल है वही हांसल हमारी और सुलतान टिपूकी एकी करनेमें है; ऐसा मेरा दिलका ख्याल होता है. इस वास्ते एकी जबाबमें ऐसा कहना के इस बातमें टिपु अपना कौनसा मतलब पुरा करेगा ?

वकी०—ते आपला एकट्याचाच केवळ फायदा करून घेणार आहेत असा अर्थ बिलकुल नाही. ह्यापासून जो कांहीं नफा किंवा तोटा होणें असेल तो दोघांचाही होईल. आमचे खांसाहेबांचें ह्यणें असें आहे कीं, आपण आणि आह्मी दोघे भाऊ आहोंत. आतां व्यवहार न पटल्यामुळें ते भाऊ भाऊ सुद्धां भांडतात, तसा तुमचा आमचा तंटा आहे ह्यांत कांहीं आश्चर्य नाही. परंतु प्रसंगांतीं भावांनीं एकमेकांच्या उपयोगीं पडावें हा परस्पर धर्म आहे. तर तो धर्म लक्षांत आणून आपली आणि आमची सध्यां एकी झालीच पाहिजे. कारण ह्छीं पेशवे फारच बलाढ्य झाले आहेत, तेव्हां आज जर आपण एकमेकांत कलह करीत बसलों तर उद्यां पातशाहीचें नांव सुद्धां उरणार नाही. तर ह्या गोष्टीचा सरकारासह आपण व सर्व सरदारमंडळीनें विचार करून

कायतें नीट उत्तर मला मिळावें, ह्यणजे त्याप्रमाणें मी खांसाहेबांस कळवीन.

(सर्व सरदार वकीलाकडे पाहून माना डोलवितात व वजीर निरुत्तर होऊन संचित बसतो.)

निजा०—खैर करो ये बातोंकी. पंडत दिल पाकसे टिपु जो मुझे मिलने चाहाता है तो मैभी इस बातमें राजी हूं. तो तुम जाके सुलतान टिपुकूं इतल्ला देना के इस बातमें मै राजी हूं. मगर पेहेलेसे राजी होके गाजीका काम करेगा, और आखर दुनियामें पाजी बनेगा; इसका ख्याल हाल करना. एकदफे तलवार म्यानमें खैंची तो जान बहाल है. ऐसा टिपूका विचार होय तो इसमें हांसल होयगा; नहीं तो इनसान होके हैवान बनकर जानकी फिकीर करेगा तो इस बुद्दके हातसे जान जायगी. डरेगा सो मरेगा, लडेगा सो चडेगा. इस बातका ख्याल कर, दिलकी फिकीर दूर कर, करतारकी थाद कर, और मेरी मुलाखत कर. जाव ऐसा कहदेव.

वकील—ठीक आहे सरकार. आतां रजा मागतों; गरिबावर मेहेर भसावी. (सलाम करितो.)

निजा०—पंडत, जाव; इसबातका खुलासा जल्दी होना चाहिये. (वकील सलाम करून जातो.)

निजा०—वजीर, सब सरदार लोग ! वकीलका कहना सब लोगोंने सुनलिया; इसमें अपना मतलब यह है के, हाल पेसवे बड़े मगरूर होगये. उस्कूं जेरदस्ती देना यह काम मुसलमीनके अवलाद लायक नहीं. क्योंकि गद्दीके मालक, मुल्कपर हुकूम चलानेवाले पहिलेसे हम मुसलमीन ठेरे. ऐसा हांके पेडका चुवा वो सिवाजी मरगट्टेनें लाटलुटकर पातशहा होगया, और हाल किसीको न मानता रहा. वास्ते टिपु और हम दोनो मिलके, उस पोकल कछोटे बम्मनकी और उस मरगट्टेकी खबर लेना जरूर है. सबव पहिलेसे टिपुकी एकी करना जरूर; वास्ते उस्कूं जबाब तो दे दिया. पहिले पेसवेपर हल्ला करके उस्का मुल्क अपने ताबेमें लेना और फेर टिपुकीभी खबर लेना. उस्की हमारे आगे क्या बिसाद है ! परवरदिगारके मेहेरसें टिपुका कान पकडकर उस्का लोह जो समसेरसें न पिलावूं तो मेरा नाम निजाम नहीं.

वजी०—सरकार, यही बात है. अल्लातालाके मेहेरसें अपनी दिलकी मुराद पूरी होना, यही सब सरदार और छोटे बड़े हुद्देदार चाहते है. तो सरकार, अभी किसी बातकी फिकार दिलमें न लाके टिपुकी मुलाखत लेना यही अच्छा है.

निजा०—वजीर, अच्छा है. अभी इस बातका ख्याल करना इलाही है. दरबारका काम हो चुका. अभी करतारकी याद एक घड़ी करना, और दिलसे आराम लेना; वास्ते परवरदिगारकूं खुसीमें रखनेके लिये निमाज-खानेमें चलो. दरबार खलास है.

छडीदार—सलामपर निगा कीजिये मेहेरबान सलाम.

[सर्व जातात. पडदा पडतो.]

प्रवेश तिसरा.

स्थळ—हैदराबाद शहराजवळील मैदान.

[मैदानांत टिपूचा तळ पडला आहे व टिपू सर्व सरदारांसह बसला आहे तों पडदा उघडतो.]

टिपू०—वजीर, निजामसें एकी करना ये बात अच्छी नहीं. लेकिन आदमीनें वखतपर नजर देना जरूर है. ये टिपूका मतलब हो चुका; फेर जो निजामको पातशाहीसें दूर करके हजाम न बनाऊं तो टिपू ये नामहीं छोड देऊंगा. भला देखेंगे. अबतो हैदराबादके नजीक आन पोहोंचा, आगेकी बात रहीम जाने. (कांहीं थां-

बून) वजीर, गोपिनाथपंडतकूं बुलाव ? (वजीर वकिलास घेऊन येतो व वकील टिपुसुलतानास सलाम करून उभा राहतो.)

टिपु०—पंडत, तुम जब निजामके तर्फ बकिलायत करनेकेवास्ते गयेथे तब उस नादान बुद्धेने आखरका जबाब कैसा दिया ये और एकदफे सुन्ने चाहताहूं; वास्ते कहदेव.

वकी०—हुजूर, निजामसाहेबांनीं प्रथम कांहीं माझे ह्मणणे कबूल केलें नाहीं. त्यावेळीं त्यांच्या मनांत आपल्या बद्दल पूर्ण वैर असलेलें दिसलें; आणि मला सरदारांबरोबर बोलावयास सांगितलें. पुढें ज्यावेळीं मी सर्व सरदारांसह निजामसाहेबांची कानउघाडणी केली तेव्हां मला त्यांनीं आपल्यास सांगण्यास असा निरोप सांगितला कीं, तुम्ही जर मन शुद्ध करून केवळ एकी करण्याच्याच उद्देशानें येत असाल तर त्या कामीं मी तयार आहे. परंतु प्रथम राजी होऊन नंतर गाजीचें काम कराल आणि अखेर पाजीपणा मिळवाल यांत अर्थ नाहीं. जिवावर उदार होऊन कोणतेही काम केलें तर त्यांत यश येईल; आणि डराल तर मराल. इतक्या गोष्टींचा विचार करून आपण भेटण्यास यावें असा त्यांनीं मला

निरोप सांगितला तो आपल्या पायांपाशी निवेदन केला; याउप्पर हुकूम होईल तसा वागतों.

टिपु०—वजीर, मुझे विचार करना ऐसा निजाम कहता है ! अच्छा, पहिले अपना मतलब पुरा करना फेर इस निजामकी दाढ़ी निकालके उसके दांत गिरादेंगा तो ये टिपु समझे. अरे बुढ़े बापसे बेटा सिखाता है ! घोडे मैदान नजीक है, कौन डरेगा और कौन चढेगा ये तुझे समझेगा.

वजी०—सरकार, निजामकी अवकाद क्या है ? लेकिन जो करना सो विचारसे करना. कयौंके, दुष्मन अपने ताबेमें आया फेर गर्दन उडाना. हाल तो इस्से दोस्ती करना है. तो इस बातका ख्याल खैर करना, और पंडतके कहने बमुजफ उसके दरबारमें आप जाना; और उस्से सल्ला करना. भल्ला करे और अपनी मुराद पुरी होवे.

टिपु०—अच्छा वजीर, तमाम इंतेजान तय्यार करो दरबार जानेका. और पंडत, जाके निजामको कहो. वख्त मिलनेका तबतख मैभी कपडे पेनके तय्यार हो जाऊं.

[जातात.]

प्रवेश चवथा.

स्थळः—निजामाचा दरबार.

(निजाम सर्व सरदारांसह बसला आहे तों पडदा उघडतो.)

छडी०—दौलत तुंबर बढती हुवे मेहेरवान सलाम.

निजा०—वजीर, सब सरदार लोग, अब मुझे होश आया. बकीलका कहेना बराबर नजर आता है; इस बातमें तकरार नहीं. दोस्ती करना यह बातमें इकरार है. भला ! (मिशांवर ताव देऊन) अदमीनें जुबानसें कहेना बूरा बदनामीका काम है. यह बातका खुलासा करना नहीं. वजीर, टिपूसें दोस्ती करनेमें हांसल है के, यह सब फसल है इस बातमें मेरी अकल गुंग है; वास्ते करो यह बातकी सिकल और कहो मुझे दिलका ख्याल.

बजी०—हुजूर, ख्याल करनेका कुच काम है! अपनेसें सब तय्यारी तमाम है. अपनेमें है यह बातक नाम वास्ते दोस्ती करना यह तो कायम. करमकी बात जाने करीम और जस देनेवाला है रहीम. गरीब परवर

यह तो मेरी सल्ला है. (इतक्यांत गोपिनाथपंत वकील येतो.)

वकील—(दाराजवळ येऊन) कोण आहे देवडीवर? हुजुरानां वर्दी देकीं, टिपुसुलतानाचा वकील आला आहे.

छडीदार—अच्छा. (पुढें जाऊन सलाम करितो.) हुजूर, टिपुसुलतानके तर्फेसें वकील आया है.

निजा०—अंदर लेआ. (छडीदार जाऊन वकीलास घेऊन येतो व वकील सलाम करितो.)

सर्व सरदार—आय्ये पंडत बैठो, क्या हवाल है!

वकील—हुजूर, आमचे सरकार ह्यणजे सुलतान साहेब आपली भेट घेण्यास येत आहेत; हें कळाविण्यास त्यांनीं मला आपणाकडे पाठविलें आहे.

निजा०—बहुतही अच्छा है. सब सरदार लोग, बडे दर्याफसें टिपुसुलतानकूं अपने दरवारमें ले आना.

वजी०सर्व सर०—हुजूरका हुकम सिरताज है. (सर्व सरदार सामोरे जातात व टिपु सर्व सरदारांसह प्रवेश करितो. नंतर सर्व सरदार एकमेकांस भेटतात.)

वजी०—आस्ते चलना खांसाहेब, हुजूरका हुकम दरवारमें आनेका है वास्ते चलना. (सर्व दरबारांत ये-

तात. निजाम टिपूस भेटतो व आपल्या तक्तावर घेऊन बसतो.)

टिपू०—सलाम आलेकम सलाम सब सरदार लोग.

सर्व सर०—गरिबन्न नवाज, हुजूर पूरनूर.

निजा०—क्यों सुलतान, खुषमिजाजमें तो हो ?

टिपू०—अजीज, रहीमके रहमसे तो खुषीमे है.

निजा०—अच्छा सुलतान टिपू, वचिस रखा है; लेकिन आजदिनतख इस दुनियादारीमें तुने इस निजाममें दुषमनी किया. खैर, अच्छातालाने तुझे अभी मेरी मुलाकत लेनेकी इच्छा देदिया, अब तेरे दिलका तर्क कैसा है ये मुनेनेके वास्ते ये निजाम चाहता है; बिना फरक बध्यान कर.

टिपू०—हजरत साहेब, ये टिपूकू हुजूर आनेकी सबब ये हैके, आपसे सिकस्तीसे दोस्ती कमाना और दुनियामें दोनोंका नाम जमाना. ख्याल करके देखा तो आपापसमें लढाई करनेमें न कुच हांसल है, मगर आखर जिनगानीकी फसल है वास्ते ही यह दोस्ती की सिखल है; सबब अपने दरबारमें पाहिलेही वकील भेज दिया.

निजा०—देख टिपू, अब पस्तावा करनेमें कुच फाय-

दा न होगा, लेकिन बच्चेकी मुराद पूरी करना यह तो बूढ़का काम, वास्ते मैंने दुष्मनी छोड दिया. अब तेरे दिलमें सलोकी किस सबब करना ये बय्यान करो.

टिपु०—देखिये हजरत, तुम हम तो मुसलमीनके अवलादके ठैरे हैं, बजावत दुष्मनकों चौथाही देना ये बात बडी लाजीमकी है. खयाल करो, ये पहिला पेडका चुवा सिवाजी, उसमें गाजी लाटलूटके पाजीका काम किया ओर पातशहा बना! जातका मरगट्टा; मगर तुमसें हमसें पट्टा होगया. उसीवख्त अपने जातके इनसानमें सेर बडे बडे लेकिन उनके हातसें कुच न बना. हालतो पेसवे पूनेमें गद्दी चलाते है. उस कम अस्सल, नादान, निमकहराम, पोकल कछोटके वम्मनकों आपको चौथाई सरदेशमुखी देना पडता है. हाल जो अपना यह हवाल है तो फिर आगे क्या क्या होगा इस बातपर नजर रखना आपको मुनासीद है.

निजा०—टिपु तूं कहता है सो बराबर है. लेकिन तखदीरके आगे तथबीर क्या करे? दिलकरार ये रखनाके यह सब करतबी करतारकी है. इसबातमें इनसानकी न करार क्या करे! लाहोल बाला, मौला अल्ली तेरी कुदरत कुच और है!! दिलदार टिपु, दिन ख्वाब

दिल बेताब, बेचैन होता है. अल्लातालाके रहीमसे चा-
हाताथा के तेरी और मेरी मुलाकत होना; सो वरुत
आज आया है. अबी तेरी हमारी दोस्ती होगई. तो
पहिले क्या करना के जिस्से उस नादान दिले कछोटके
पेसवेकी अपने हातसे कत्तल हो जावे ऐसा करें.

टिपु०—दोनोंका दिल एक हुवा तो पेहेडही फुटा
जायगा. फेर पेसवेकी मगखूर कौन रखे. हजरत, तु-
मारा दिल चाहता होय तो मैभी उससे राजी हूं. मगर
करना सो अच्छी नजरसे करना. हाल जो है सो पूनेमें
गद्दी चलानेवाले अकलमंद है. वास्ते उनकी गसरी अ-
कलमंदीसे देखना चाहिये. पहिले मेरा दिल ऐसा चाह-
ताहैके, नरगुंदका देसाई हाल बदमस्त होगया. ओही
जातका बम्भन है. आजदीनतख चौथाई मुझे देतारहा,
और हाल पेसवेकूं देताहै. बदमाष, बेवकूब, नादान, ह-
रामखोर पेसवेकों जाके मिला. वास्ते उनकी कत्तल अ-
व्वल करना, धामधूम लूटलाट करके किछा फस्त कर-
ना, सब बम्भनकों मुसलमीन बनाना. इसीसे पेसवेभी
अपने ताबेमें आनेकी सबब है. वास्ते ऐसी मतलबकी
कारवाई करके अपनी मुराद पूरी करना ऐसा मेरे ख्या-
लमें आता है; फिर आपकी दिलमुबारक कैसी है सो

इलाही जाने.

निजा०—टिपु, इनसानमें अकल ये चीज बडी अजब है. तुने अभी जो सिकल बताई सो तो अच्छी है. वास्ते तुमारी फौज और हमारी फौज दोनो मिलके नरगुन्दका किछा हछा करके फस्त करना ये तो बिचार ठेरा. लेकिन कुच कायदेकानू बमुजफ चलना ये आदमीका काम है, वास्ते आपापसमें तह करना जरूर है सो अभी करेंगे.

टिपु०—अच्छा है हजरत, अपना कहना बराबर है. अब मैं रजा मांगताहूं.

निजा०—दोस्त टिपु, अब चलो; मैभी तुमसे और गुफ्तगो करने न चाहताहूं. वास्ते अभी दरबार खलाष करके दोनोही बराबर जायेंगे.

भाल०—ग्यारा घडीका अम्मल है.

निजा०—वझीर अभी दरबार खलाष करो और चार घडीसें तुम और फौजबक्ष मेरे मेहेलमें आनेकी हुषारी रखना; कुच मतलबी करना है वास्ते सुनाताहूं. (दोघे उदून जाऊं लागतात.)

भाल०—खडी ताजीम नजर रखो मेहेरबान सलाम.

[पडदा पडतो.]

प्रवेश पाचवा.

स्थळः—नरगुंदचा किल्ला.

पात्रेंः—नरगुंदकर, कांहीं सरदार, चौकीदार व शिपायी वगैरे मंडळी.

[किल्यांतील दिवाणखान्यांत सरदारांसह नरगुंदकर देसाई बसला आहे तों पडदा उघडतो.]

नरगुंदकर दे०—सरदारहो, माझे ह्मणणें असें कीं, जात्याभिमान आणि लोकांत कीर्ति करणें हीं दोन्ही प्रत्येक मनुष्य प्राण्याला प्रिय असलींच पाहिजेत, तीं आह्मांला नाहींत तर आह्मी मनुष्य कसले ! विचार करा, विस्तीर्ण आम्रवृक्षाची घनदाट छाया टाकून कोणी कारवीच्या वृक्षाखाली विश्रांतीला बसेल काय ? आमचें ब्राह्मणी राज्य हल्लीं किती प्रबल आहे ! तेव्हां आह्मीच कां त्या यवनाला खंडणी द्यावी ? अर्थात् देणें ही गोष्ट आह्माला लाजिरवाणी आहे. आतां इतकेंच कीं त्या यवनांपासून कांहीं पिडा भोगावी लागेल. परंतु हरकत नाहीं. आज पोकळ सोडलें तर पुढें तें जाचक होणार.

१ ला सर०—त्येची काळजी कर्ताया कशापाई !

आज पावतुर दोन तीन वेळ तो मुसंडा आपल्यावर चढाई करूनशेनी आला व्हता पण त्येचे आपल्या ह्योरे काय चालणार है ? सरकार, ही बघा बया लटकवलिया ! हिचा परताप त्या मुसंड्याला ठावा न्है ? सरकार, आपन केले तें लै ब्येस; अक्षी माझ्या मनापरमानेंच झालें. मुसलमानासनीं आपुन खंडणी काय ह्मणून द्यावी ?

२ रा सर०—माझेही ह्मणणें तेंच होतें. त्या यवनाला खंडणी दिल्यानें आपल्याकडे भागुबाईपणा येतो नाहीं कां ? त्यांतून आह्मी जर निर्बली असतो तर गोष्ट निराळी. आपण गाजी सारखे गाजी असून मुसलमानांची हांजी हांजी काय ह्मणून करावी ? झालें हें फार उत्तम, त्याला असाच जबाब मिळावा ही माझी इच्छा होती; ती देवानें पूर्ण केली. येऊन जाऊन भीति काय ती चढाई करून येईल याचीचनां ? पाहून घेऊं ! त्या लांडग्यानाही समजलें पाहिजे कीं, आमच्या आंगीं किती पाणी आहे तें. सरकार, आपण वारंवार काळजी करूं नये. यवनांचा पाड काय ?

नरगुं०—छेहो, त्यांची काळजी कौण करतो ? मी आतां ह्या टिपुलाका भिणार ? आमचा दारांत बांधलेला टिपु आणि हा टिपुमुलतान मी बरोबर समजतो. मी तर

आतां निश्चय केला आहे कीं, यवनाला ह्मणून खंडणी द्यावयाची नाही. प्राण गेला तरी बेहेत्तर ! बरें; सरदारहो, किल्याचा बंदोबस्त चांगला ठेवा. काय प्रसंग येईल याचा नेम नाही. कारण नुकताच त्याचा वकील येऊन गेला आहे तेव्हां कांहीं तरी तो धामधूम केल्यावांचून राहणार नाही. ह्मणून किल्यावरील दारूगोळा अगदी तयार असावा. फौजेनें निजणे झालें तरी शस्त्र जवळ असावें, वेळ सांगून येण्यासारखी नाही.

१ ला सर०—सरकार, ती समदी तयारी अशी बराबर करून ठेवेलिया. हुकूम व्हन्याची खोटी की दिलीच बगा तोफेला सरबत्ती आन काय ? (इतक्यांत निजाम टिपु आणि सर्व सैन्य प्रवेश करितात.)

टिपु०—हजरत निजाम साहेब, यह नजर आता है सोही नरगुंदका किल्ला है, वो बदमाश, नादान, देसाई ! किल्लेके बिच रहता है. वास्ते पहिले किल्लेपर हल्ला करना. अल्लाताला जस देनेवाला है.

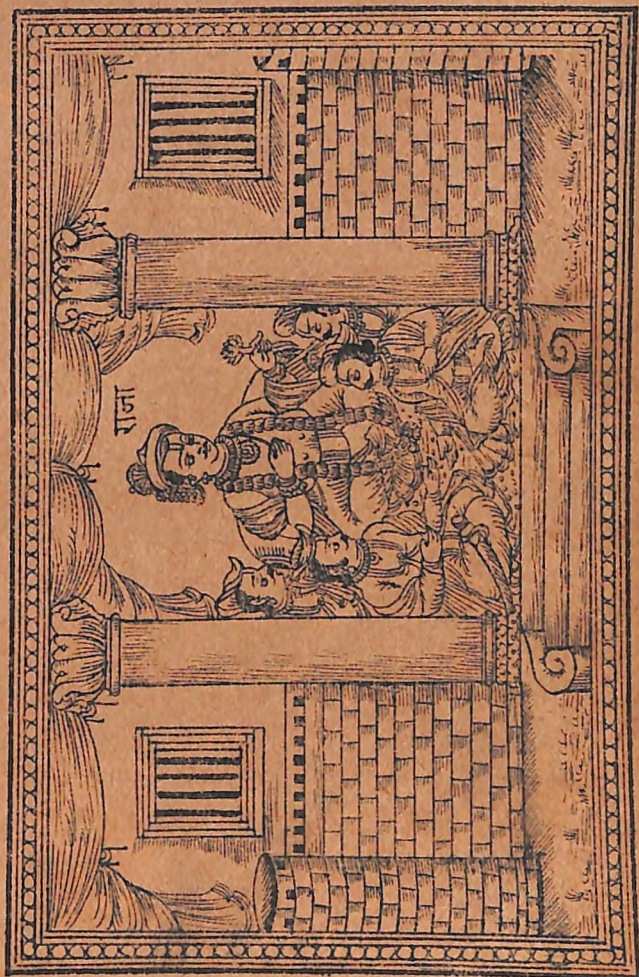
निजा०—अच्छा टिपु, तेरी अकलकी तारीफ करना मौजूद है. यह किल्ला अपने ताबेमें आया तो बहुतही अच्छा होगा. फेर पेसवे बिछी क्या करे गा ? अच्छा इलाहीका नाम लेना और दीन गजवावना. सब लो-

गोनें एकही वरुत गिछा करना. और वो बेवकूब देसाई, कहां है सो देख लेना. जानसे निकाल करना और सब बम्नकों मुसलमीन बनाना. ऐसा सब लोगोंसे हुकूम फर्माना; और हछा करके किछा फस्त करना.

टिपु०—अछा है हजरत [सर्वास] सुनीये जवान ! अबी वरुत पडेगा सो सब लोकोंने अभी आपआपना हत्यार समालके हुशार राहिना. किछा तो नजीक आया. अभी चढाई करके जाके धामधूम करके सब फस्त करेंगे और उस नादान देसाईकी जान कत्तल करेंगे. चलो हीन बोलो, गोलंदाजसे हुकूम करनाके गोलेका मार सुरू करो. और तुतारी, डंका बजानेको हुकूम फर्माव. पहिले मोरचा लगाव.

बझीर—हांजी हुजूर ! हुकूम सिरताज है. हीन हीन बोला हीन ! [सर्व हीन गाजावितात, व किल्यावर तोफांचा मडीमार करितात.]

देसाई—काय ! किल्यावर तोफांचा मार सुरू झाला ! अरे, बघता काय ! चला उचला हत्यारे आणी थ्या देवाचें नांव. (सर्व एकच दंगा होतो, लढाईस सुरवात होते, दोन्हीं सैन्ये एकत्र होऊन कांहीं वेळ लढाई होते, त्यांत किल्यावरील लोकांचा परामव होतो)



वज्जीर व कांहीं मुस० सरदार—चलो, करो हज्जाः
मौलाअल्लीका नाम लेव, चलो दीन दीन.

टिपु०—अब क्या देखते हो ? चढो किल्लेपर, ल-
गाव मोरचा, और सब लोकोंकी कत्तल करो, वो नादान
देसाई कहां है पकडो उसकूं, बम्मनकूं मुसलमान बनाव,
तोफके मारे सब किल्ला फोड डालो, और लूट करके सब
दौलत फस्त करो ? [असा हुकूम होतांच सर्व मुस-
लमान लोक किल्यावर चढून कत्तल करूं लागतात, व
देसायास पकडून आणतात.]

टिपु०—क्यैरे देसाई, अब तेरी मगरुरी कहां है ?
नादान बेवकूब खंडणी किस्स देता हैरे ? ये टिपुकूं प-
छानता नहीं ?

देसाई०—अरे चल मुसंज्या, विचारतो कोण तुला ?
मी पाहिजेल त्याला खंडणी देईन. अरे मर्द होतास तर
सांगून यायचें होतेंस आणि मग पाह्यचें होतेंस कीं एका
टिपुचे किती टिपु होतात ते. बापाच्या भीतीनें चोरून
आलास काय ?

टिपु०—चूप जादी बक्वा करे तो जानसें अलख
करेंगे.

देसाई—अरे चल विचारतो कोण ? एक थोथरीत

देईन तर पूर्वेचें तोंड पश्चिमेला करीन. ठाऊक नाहीं ?

टिपु० — क्या देखते हो ? करो कत्तल. (असें ह्य-
णतांच सर्व हल्ला करून देसायास ठार मारतात, आणि
त्याच्या बायका व इतर नगरांतील बायका व ब्राह्मण
आणून त्यांच्याशीं दंगा करितात, व त्यांच्या तोंडांत
थुंकून वगैरे त्यांस बाटवितात, लुटालूट करून सर्व किड्डा
फस्त करतात. पडदा पडतो. सर्व जातात.)

प्रवेश सहावा.

स्थळ—मैदान. ब्राह्मण समुदाय.

(सर्व ब्राह्मण विचार करीत बसले आहेत तों पडदा
उकडतो.)

१ ला ब्राह्मण—हर हर देवा ! कशीरे डोळे झांक
केलीस ही. नीति सगळीच बुडाली काय ? देवा ! तुझ्या
बरीं धारवाडी कांटा आहेना ? मग ह्या पाप पुण्यांत
रतीला खंडीची तूट यावी काय ? शिव शिव !

२ रा ब्राह्मण—तरी बरें ! त्या मोड्यानीं जिवंत
ठेविलें हें भाग्यच समजायचें. कायहो ते पोळ सोडले-

ह्या बैलाप्रमाणें माजलेले लांप दाढीचे खाते, आपली नरडी धरीत आणि बेशक तोंडांत थुंकत. गुलामांनीं ह्या गांवातले सगळेच ब्राह्मण बाटविले. देवा ! त्या दुष्ट यवनांचा सत्यनाश कर.

३ रा ब्राह्मण—अहो, काय सांगूं ! माझी चौदा वर्षांची पोरगी हो कशी नक्षत्रासारखी होती; तिला बाडवून तिच्या बरोबर ह्मणे निक्का लावून शादी करतो ह्मणून घेऊन गेले हो ? काळीज कसें करपून गेलें आहे ! देवा ! त्या दुष्टांचा निकाल करून टाक.

४ था ब्राह्मण—अहो, तुमची मुलगी नेली पण माझ्या घराचें सपशेल वाटोळें हो झालें. आमच्या कुटुंबाचें त्यांनीं हालहाल हो केले. किती ह्मणून सांगवें ! माझ्या गळ्यांतील त्यांनीं जाणवीं तोडलीं, आतां लघुशंकेला सुद्धां बसण्याची पंचाईत. देवा देवा ! तुला कांहींचाकरे दया नाहीं !

एक ब्राह्मण—अहो, आतां असें रडत बसून काय उपयोग ? झालें तें काय भरून येणार आहे. आतां पुढचा विचार कांहींतरी केला पाहिजेनां. तसेंच आतां अन्न ग्रहण करतां उपयोगी नाहीं. कारण धर्मशास्त्रांत जर कांहीं आधार सांगितला असला तर शुद्ध होण्याला

तरी मार्ग राहिल. देवाच्या मनांत होतें तसें झालें !

२ रा ब्राह्म०—अहो रडले देव, आणि आग लावा त्या धर्मशास्त्राला ! देव असता तर असे दुःखाचे डोंगर कोसळले असतेका आपणावर ? दुष्टानें आपला कावा साधला. आतां तुमची दाद घेणार कोणी आहेका ?

१ ला ब्राह्म०—अहो, दाद घेणार नाहीं असें कां ह्मणतां ? सर्व कांहीं गोष्टी होतील; पण प्रयत्न केले पाहिजेतनां. यवनांची खोड मोडायला कुठे वेळका लागणार आहे. ब्राह्मणांचे रक्षणकर्ते पुण्यामध्ये सबळ आहेत. पेशव्यांजवळ जर दाद लावली तर आपल्या डोंब्यांचें पारणें नाहींका फिटणार ?

३ रा ब्राह्म०—हो ही गोष्ट मात्र खरी. मला वाटतें आपण पुण्याला जाऊन प्रयत्न तर करून पाहूं. कां सदाशिवभट खरेंना ?

सदाशिवभट—हो खरें ह्मणजे ? हें काय विचारतां ? माझाही विचार मघापासून तोच होता. चला तर माझी तयारी आहे.

एक भट—इथे कोण नको जाऊं ह्मणतो. मला तर त्या मुसलमानांचा राग आला आहे. आतां जर त्यापैकीं कोणी भेटेल तर त्याला ठारच मारीन.

एक भट-भेटले होते तेव्हां हात केळी खायला गेले होते ? मी तर निश्चय केला आहे कीं, पेशव्यांनी दाद घेतली नाही तर मग मी हुसेनभट होणार. कारण आजपर्यंत होतों भट, आणि आतां त्या मुसलमानांनीं बाटविलें; तेव्हां पुढें काय करायचें !

१ ला ब्राह्मण—या वेड्याला बारसें आणि बारावा सारखाच ! अरे वेड्या, आह्मी काय विचार करतो आणि हा ह्मणे मी हुसेनभट होणार ! बरें चला, सगळे मिळून एक कटानें पुण्यास जाऊं आणि पेशव्यांच्या दारांत पडूं. मग जें होईल तें होईल.

सर्वजण—फार उत्तम आहे, चला तर. आह्मी सर्वांनीं निश्चय केला आहे कीं, या गोष्टीचा निर्णय लागल्यावांचून पाणी सुद्धां तोंडांत घालायचें नाही.

२ रा ब्राह्मण—पेशव्यांनी दाद घेतली नाही तर ?

१ ला ब्राह्मण—अरे अपशकुन्या, पण असें कां बोलतोस ? नाही घेतली तर मुळामुठा नर्दीत जीव देऊं, चला तर खरे. (सर्वजण जातात.)

प्रवेश सातवा.

स्थळ—शहर पुणे. नानाफडणिसाचा वाडा.

(नानासाहेब पूजा करीत बसले आहेत व कांहीं शा-
ग्रीत जवळ उभे आहेत तों पडदा उघडतो.)

[सर्व ब्राह्मण गळबला करीत येतात.]

ब्राह्मण—अहो महाराज, बुधवारपेंठ कोणची, आणि त्या नानासाहेबांचा वाडा कुठे आहे ? आमची ब्राह्मणांची कांहीं दाद लागेल काय ? आज चार दिवसांचे उपाशी आहोंत. हें ब्राह्मणीराज्य आहे ह्मणून येथें फिर्यादीला आलों. कोण आहेहो येथें ?

चौकीदार—अरे कोण आला आहे पिरपिर लावाया. (पाहून) हीं बामनं इथ रडत कशापार्यां आलीं हैती ! बामनानूं, का रडता तुम्ही ?

एक ब्राह्मण—अरे बाबा, नानासाहेबांचा वाडा हाच काय ?

चौकीदार—व्हय व्हय ह्योच. तुला हतं येन्याच कोनच काम हये, आन रडता कशापार्यां ?

ब्राह्मण—बाबा तुला सांगून काय उपयोग ! पण मे-

हेरवानी करून जर वर्दी देशील तर उपकार होतील. आमची सरकाराजवळ फिर्याद आहे.

चौकीदार—तुम्ही हत बसा, इतक्यामंदी मी सरकारास वर्दी देवून येतो. (जातो व नानासाहेब पूजेला बसले होते त्या दिवाणखान्याच्या दरवाज्या जवळ जाऊन उभा राहतो त्यास पाहून.)

शाश्रीत—सरकार, देवडीवरचा शिपाई वर्दी घायला आला आहे.

नाना०—त्याला ह्मणावें क्षणभर उभा रहा बोलूं नकोस. (शाश्रीत जाऊन खुणेने त्यास दर्डावून सांगतो, नानासाहेब पूजा आटपून देवाचें तीर्थ घेऊन पाटावरून उठतात व चौकीदारास.)

नाना०—काय आहेरे दगडू, देवडीवर काय वर्तमान आहे !

चौकी०—सरकार, देवडीवर चारपाचशे वामन आले हयेती; आन अक्षी रडत्याती. मी त्येना जा ह्मनून सांगितल पन ते काही ऐकना तव्हां वरदी देया आलोंया.

नाना०—त्यांना आंतल्या दिवाणखान्यांत बोलव.
[चौकीदार मुजरा करून जातो व ब्राह्मणास घेऊन ये-

तो. ब्राह्मण नानासाहेबास साष्टांग नमस्कार घालून दी-
न मुद्रेने.]

ब्राह्मण—महाराज, आमचें रक्षण करा ! रक्षण करा!
आह्मी सर्वस्वीं नाडलों गेलों. आज चार दिवस उपोषित
आहोंत, ह्मणून आपल्या पायांजवळ आलों आहोंत. म-
हाराज, आपल्या सारखे धनत्तर राजे असतां आह्मी
ब्राह्मणांनीं दुःख भोगावें काय ?

नाना०—महाराज, सर्वजण कांहीं गिळ्या करूं नका;
एकजण कायतें वर्तमान सांगा.

एक ब्राह्म०—महाराज, आह्मी नरगुंदचे राहणार.
तेथें काय अनर्थापात झाले ते कांहीं सांगतां येत नाहींत.
नरगुंदचा किळ्या त्या चांडाळ टिपुनें अगदीं फस्त करून
टाकला, सर्वांचीं घरेंदारे उदास करून सोडलीं, ब्राह्मणां-
च्या सुंता करून त्यांस मुसलमान केले, ब्राह्मणांच्या
ज्या स्त्रिया चांगल्या सुस्वरूप होत्या त्या आपल्या बरो-
बर घेऊन गेले, नरगुंदच्या देसायाला ठार मारलें, असे
एक कीं दोन अनर्थ त्यांनीं केले ! महाराज, त्या मुस-
लमानांनीं तिथे आतां कांहीं शिळक ठेवलें नाहीं. सर्व
राज्य भयान करून टाकलें. ह्मणून महाराज आह्मी
आपल्याकडे आलों आहोंत. दाद लागली तर ठीक आ-

हे नाहींतर मुळांमुठा नदींत जाऊन जीव देऊं.

नाना०—ठीक आहे ब्राह्मणहो, आतां तुमची सर्व व्यवस्था लागेल. कोण आहेरे देवडीवर ? अरे दगडू, इकडे ये पाहूं असा.

एक चाकर—जी मी हतचहै नव्हका.

नाना०—या ब्राह्मणांना घेऊन शास्त्रीबुवांकडे जा, आणि त्यांना साझा असा निरोप सांग कीं, ह्या ब्राह्मणांना मुसलमानांनीं बाटविलें आहे तर धर्मशास्त्राप्रमाणें यांना प्रायश्चित्त देऊन मोकळें करावें. व मुद्दपाकांत जाऊन वर्दी दे कीं यांची भोजनाची सोय लवकर करावी.

(सर्व ब्राह्मण व हुज्या निघून जातात.)

नाना०—अरे हैबती, वाज्यांत जाऊन वर्दी दे कीं, आज दोनप्रहरानंतर कांहीं महत्वाच्या कामाकरितां दरवार भरवावयाचा आहे; तेव्हां सर्व लहान थोर सरदार आणि दरवारी मंडळी यांना आमंत्रण करावयास सांग.

[सर्व निघून जातात—पडदा पडतो.]



प्रवेश आठवा.

स्थळ—पुणे राजदरबार.

[श्रीमंत सवाईमाधवराव गादीवर बसले आहेत, सर्व सरदार आणि दरबारी मंडळी आपल्या जाग्यावर बसली आहे ती पडदा उघडतो.]

भालदार—श्रीमंत सवाईमाधवराव पेशवे हिंदुपद पादशहा मेहरबान सलाम खडी ताजाम.

श्रीमंत—नाना, सर्व सरदार मंडळ जमलें आहे तर आतां दरबार भरण्याचें कारण सर्व सरदारांना सांगा.

नाना०—जी, [सरदाराकडे पाहून] सर्व सरदार हो ! हें दरबार भरण्याचें कारण इतकेंच फीं, हल्लीं ह्यै-सुरचा बादशहा टिपुसुलतान आणि हैदराबादचा शहा निजाम हे दोघे प्रबळ होऊन आपल्या सरहद्दीवर त्यांणीं फारच दंगा माजविला आहे. नुकतीच परवांचे दिवशीं त्यांणीं नरगुंदकर देसायावर स्वारी करून त्यास ठार मारिलें, किल्ला लुटून फस्त केला, आणि ब्राह्मणांची शेंडी आणि जानवीं तोडून त्यांना मुसलमान केलें. बायका पळवून नेल्या. अशीं नाहींनाहींतीं अनन्वीत

कृत्ये केलीं. तेव्हां याबद्दल थोडा विचार करून त्या दुष्ट यवनांचा बंदोबस्त करावा, असें वाटल्यावरून हा दरबार भरविला आहे. तर सर्व लढाऊ आणि शूर सरदार हो ! अशा प्रसंगी आपल्या ज्ञातींचा, अभिमान राज्यनिष्ठा, आणि बाहुबल हीं तिन्ही त्या यवनांला दाखवून योग्य शासन करणें हें आपलें काम आहे. हें आतां सर्वांना समजलेंच आहे. तर सर्वांनीं आपापलीं मत्तें श्रीमंत सरकारांना सांगावीं.

श्रीमंत—सरदारहो, या मुसलमानांसारखी नीच जात दुसरी कुठे मिळणार आहे काय ? विचार करा, आजपर्यंत आमच्या वाडवडिलांनीं यांना किती वेळ जेरीस आणलें असेल, याची गणती होईल काय ? परंतु पुन्हां पुन्हां कोडग्यासारखी ते आपली खोडी सोडीत नार्हीत. आतां माझा तर विचार असा आहे कीं, कधीं पाहिली होती कीं नार्ही अशी त्या यवनांची खोड तोडावी. परंतु त्या सर्व आमच्या उज्या तुमच्या सारख्या एकनिष्ठ राजभक्त सरदारांच्या जिवावर आहेत. तर सांगा पाहूं, तुमची मनें तुझाला काय सांगतात तें. कां शिंदे, होळकर, गायकवाड, पोक्तबुद्धीनें योग्य असेल तें उत्तर द्या पाहूं.

शिंदे—जी सरकार, ह्या मंडी इचार कंचा करायचा हये. हुकूम व्हायची खोटी कीं नऊ लाख तोफ तय्यार हये. एकदाका सरबत्ती दिली कीं समद्या मुसलमानांची रंडकी होतिया बगा. सरकार अक्षी आपन केलेला इ-चार लै बेस.

होळकर—सरकार, मी ह्ये नि त्ये काहीं जाणत नाहीं हुकूम व्हावा मंजी त्या मुसंज्यांसनी माझी शक्ती काय आहे ते समजेल. सरकार, माशाच्या पोराला पोहाया शिकवाया नग. मुसंडा मुसंडा मंजी काय गोष्ट हाये. एकदाका भाला सुरू झाला कीं घर दाढी, मार भाला, आणि तोड मुंडकं, जणुकाय खाटीक बकऱ्याची दावनच तोडतोया, अशी ह्या मुसंज्यांची मुंडकीं कचाकच तोडतो आणि आपल्या पायाजवळ ठेवतो बगा.

गायकवाड—सरकार, माझाही इचार त्योच हाये. आन नोडा मंजी काय विशाद, ही बया लटकवलिया आपल्या पायांच्या कुरपेन. असा पराकरम हये. एका घ-टकेंत त्या मुसंज्याच बीज न्है ठेवायचा. कांद्याला भि-स्मिला कशाला हवा. होकूम व्हावा, जातो आनि चरारा मुंडकी कापून आणतो.

श्रीमंत—शाबास, यांना ह्मणावें शूर आणि तरवार

बाहादर. मी असें समजतो कीं, तो दुष्ट यवन मेलाच. असो नाना, बापु, शास्त्रीबुवा, पटवर्धनहो, मी ह्मणजे केवळ टिक्याचा मालक आहे आणि सध्या माझे अल्प वय आहे. तेव्हां माझ्या आंगी काळ, वेळ, वर्तमान, पाहून वागण्याचे पोक्त विचार अजून आले नाहीत ह्मणून विचारतो. आपण राजकार्यधुरंधर, पोक्त विचारी, आणि यथान्याय वर्तन करणारे आहांत. तर या प्रसंगी कोणत्या उपायानें त्या दुष्ट यवनांची खोड तोडावी हें सांगा.

पटवर्ध०—यांत विचारायाचें काय? मारीन किंवा मरेन ह्या विचारावांचून कोणतही तोड लागणार नाही, ह्या टिपुला तीनदां धरून आणला असेल पण त्याला त्याची लाज आहे काय? अशा प्रसंगी पेशव्यांच्या आंगी काय पाणी आहे तें त्या यवनाला दाखविलेंच पाहिजे. हा माझा विचार आहे या उत्पर श्रीमंताची मर्जी.

फडणीस—सर्व सरदारांच्या उत्सुकतेवरून आणि यवनांच्या दुष्ट कृत्यावरून सरकारचा विचार माझ्या पसंत पडतो.

बापु—श्रीमंत, मला जरी लढाईची माहिती नाही आणि तरवार हातीं धरण्याचें ठाऊक नाही तरी ब्राह्म-

णांची दैन्यदशा त्या यवनांनी केली हें ऐकून मलाही अति त्वेष आला आहे कीं जमीनदोस्त करून टाकावा त्या यवनाला.

शास्त्री—श्रीमंत, धर्मशास्त्र सांगण्याच्या कार्यां आ-
मचे विचार उपयोगी पडतात; अशा युद्ध प्रसंगांत आ-
ह्याला काय समजणार. परंतु सांप्रतकाळीं श्रीमंतांनीं के-
लेला विचार सशास्त्र आहे. असें न केल्यानें ब्राह्मणांला
थाडें हीनत्व येतें. तर लढाई करावी हें योग्य दिसतें.

श्रीमंत—असें जर आहं व लढाई करून त्या मुसल-
मानांची खोड तोडण्याची- सर्व सरदारांची इच्छा आहे
तर मीही असें सांगतो कीं त्या यवनांची खोड तोडल्या-
वांचून अन्न ग्रहण करणार नाहीं.

नाना—छे छे श्रीमंत, लढाईत येण्याचे श्रम आपण
वेळें नये. कारण परदेश पडला तो. हवा पाणी सोसणार
नाहीं. त्यांतून लढाईचें काम तें, त्यांत आपल्याला काय
समजणार. मी एवढा मोठा आहे तरी तोफेचा आवाज
ऐकला कीं मला सुद्धां सात खोल्या लपून बसावें लागतें.
हमून सांगतो कीं, आपण स्वस्त वृत्ता. हे सरदार आहेत
आह्याला हुकूम दिला ह्मणजे झालें.

श्रीमंत—ही गोष्ट तर होणारच नाही. त्या दुष्टांनीं

ब्राह्मणाला त्रास दिला ह्यणजे काय ? माझ्या आंगाची आग झाली आहे. केव्हां त्याला जेरीला आणीन असे मला झाले आहे. मी तर बरोबर येणारच.

बापु०—कां शास्त्रीतुवा, हिरा एरणीवर घण घायानें फोडूं लागलों ह्यणून तो फुटेल काय ? श्रीमंताची बुद्धी पाहिलीना, मूर्ति लहान पण विचार किती पोक्त. वृद्धांनीं सुद्धां किती ध्यावा.

शास्त्री—हें काय विचारावें, मूळ स्वभाव जाणार आहे काय. किती झालें तरी राजांजुरच, मग तिथें काय बोलावें.

शिंदे—कां गायकवाड, ऐकलें कां हें सरकारचें बोलणें जणू काय मदाचें बोट. इचार बी लै पोक्त.

गाय०—अनह्ये काय पुसावें. आमचें सरकार ह्यजी जनुका आकाशांतिल सुर्व्येनारायनच हैती.

श्रीमंत—कां नाना, मग सरदारांना देऊं आतां हुकूम.

नाना—श्रीमंत, आतां विचारायचें कारण नाहीं झाला तोच विचार कायम.

श्रीमंत—सर्व सरदारहो, ह्या गादीचे मूळ पुरुष आणि मराठी राज्याचे स्थापन कर्ते छत्रपति महाराज. यांनीं ह्या राज्याचा विस्तीर्ण वृक्ष वाढविण्याकरितां किती श्रम

केले आणि किती लोकांचे बळी दिले ह्याचें नुसतें अनुमान तरी करवेल काय ? जगांत कीर्ति, लोकांना सुख, राज्याभिमान व स्वधर्म रक्षण करणें ह्या कार्यां ज्यांनीं आपल्या प्राणाचीही पर्वा बाळगली नाहीं; आणि आपल्या बाहुबलांनें दिल्ली अटकेपर्यंत आपल्या पराक्रमाचे झेंडे ज्यांनीं लाविले त्यांच्याच वंशांत आपण जन्म घेतला आहे. तर आज त्या यवनांच्या भीतीनें स्वस्थ बसून जर लढाईचे विचार बंद ठेविले तर तो यवन उद्यां चढून जाईल, तेव्हां विंचवानें नांगी मारण्यापूर्वीच त्याला पादचर्मांनें षडण केलें पाहिजे. कारितां त्या मुसलमानावर मोहिम केली पाहिजे. सबब उदईक प्रातःकाळांच ढाल द्यायची. तर सर्वांनीं आपापलीं शस्त्रें सतेज करून ठेवा आणि चला त्या यवनांची खोड तोडा.

सर्व—(उभे राहून लवून) जी सरकार, हुकुमाप्रमाणें तयारी आहे.

भाल०—इस घडीका अम्मल है.

(इतक्यांत पानसुपारी, अत्तर गुलाब होऊन दरबार बंद होतें. पडदा पडतो.)

प्रवेश नववा.



स्थळ—ह्यैसूर प्रांत. बादशहाचें दरबार.

[टिपुसुलतान व सरदार बसले आहेत तों पडदा उघडो]

भालो—सब सरदारके सलामपर निगा किर्जाये मे-
हेरवान सलाम.

टिपु०—सुनिये वझीर, अपना मतलबतो हो चुका. न-
रगुंदका किछा अपने ताबेमें लेलिया, मगर बम्भनकी
जात बडी काफर रहती है. निमकहराम कीसी वख्त
क्या करेंगे इस्का पत्ता नहीं. वास्ते निजामसे दुष्मनी
करना बराबर नहीं ऐसा मेरे खयालमे आतां है.

वझीर—जी, हुजूर कहीसो बात सच है. नरगुंदका
किछा ताबेमे आया बात सच है. लेकिन लडाईके वक्त
बहुत लोगोंकी जान खैरात होगई. सबब हाल तो हम
जरा कम कुवत है. वास्ते निजामसे सल्ला रखना जरूर
है. अल्लाकी कुदरत कौन जाने वख्त कैसा आता है.

महमद (सेनापति)—हुजूर मेरी सल्ला ये हैके नरगुं-
दका किछा कमाने वास्ते बहोत सिकस्त होगई. खस्त
खाते खाते कल अपने ताबेमे आया. तो बदमस्त पेसवे-

का बंदोबस्त किस तन्हे होगा, इस बातका ख्याल करके लढाईकी तयारी करना. क्योंकि नरगुंदका बदमाश देसाई जातका बम्बन था वास्ते पेसवे उसकी तर्फदारी लेके लढाई किये सिवाय न रहेंगे. तो हम लोगोंने हुशारीसे रहना जरूर है. मेरे मनका इत्तला तो दिया अब हुजूर हुकूम बमुजफ चलना येतो मेरा अखत्यार है.

टिपु०—बहोत अच्छा, लढाईकी तयारी रखना. फौजकी बढ़ती करना. पेसवे जो लढाई करनेके वास्ते आये तो उनकी रंडकी बनदिगा तो मुझे टिपु समझो.

(इतक्यांत एक सेवक येतो)

हेर—हुजूर. (मुजरा करतो.)

टिपु०—तूं कौन है ?

हेर—खबरदेनेवाला नौकर हूं हुजूर.

टिपु०—क्या खबर है.

हेर—हुजूर, अपने सरहदपर पुनेके तर्फसे फौज आन पौहोर्चा है. और धामधूम करके सिपाई लोगोंकी कत्तल करतेहैं. वास्ते खबर पौहोचाने खातर मैं आया हूं.

टिपु०—बहूत अच्छा, सूनलीया चलाजा. (हेर जातो.) महमद, अपने कहासो बराबर नजर आया

अच्छा, पेसवे अकलमंद है तो इनकी गरोरिकी ढेर अपने हुशारीसे फोडना चाहिये. तो तुम अपनी सब फौज तयार रखो. जब मेरा होकम होगा तब एकदम सब-बत्ती देना और उसढीले कछोटे बम्बनकी कत्तल करना.

महमद—जी, हुजूर हुकमका ताबेदार हूं.

टिपु०—बझीर, पेसवेकी फौज कितनी है और किस तर्हे उस्कूं पायमाल करे ये देखना चाहिये. वास्ते जहां पेसवेकी फौज है वहां जाके उस मरगट्टेकी क्या हवाल है सो देखना. बख्त आया तो उनके उप्पर छापा करके एकदमही कत्तल करेंगे. तो चलो हमारे साथ. बराबर हुशार और चालाख ऐसे १० सवार लेना.

ब०—जी हुजूर. (सर्व जातात.)

प्रवेश दहावा.

स्थळ—ह्येसुराजवळील मैदान.

[पेशव्यांचें सर्व सैन्य उत्तरण्याची जागा.]

श्रीमंत—नाना, इथेच तळ देण्याचें काय बरें कारण असावें ?

नाना—श्रीमंत, अजून आपली हद्द सुटली नाही. ते-

व्हां अशा रात्रीच्या वेळीं परराज्यांत तळ दिल्यानें क-
दाचित थोडा धोका येण्याचा संभव आहे. आणि आज
तर आपलें सर्व सैन्य दमून भागून आलें आहे. तेव्हां
रात्रभर इथे विश्रांती घेऊं आणि उदईक सुर्यउदया-
पूर्वीच मोहिम फत्ते करूं ह्मणजे झालें. श्रीमंत, फार
जाग्रणाचे श्रम सोसणार नाहींत तर आतां आपण वि-
श्रांती घ्यावी.

श्रीमंत—ठीक आहे मी आतां निजतो नाना. सर्वांना
हुशार राहण्याची ताकीद द्या.

नाना—ठीक आहे. कां बापू पाहिलीना श्रीमंताची
दक्षता. [सरदारांस] सरदारहो, आतां सावधगिरीनें
असा. शिंदें, होळकर, गायकवाड, यांना सांगायला न-
कोच ह्मणा. ऐवढी रात्र निर्विघ्न घालवा ह्मणजे झालें.

सर्व—त्येची अक्षी काळजी कशा पाई करताया स-
रकार. कवांवी तो मुसंडा आला तरी बया कमरेला हा-
यच. मंग काय त्याच्या बापासनी दाद देतोया.

नाना—ठीक आहे तर, सर्वांनीं हुशारी बाळगून नि-
जा आतां.

शिंदे—जी, [होळकरास] कां होळकर, उद्यां है
लढाई, तवां निजाकी.

होळकर—त्यों तर हैच. अक्षा आज तर लै दमूनशेनी गेलों या.

गायकवाड—मंग काय बघतां तर, वाईच लुटका नि काय.

शिंदे—लै ब्यास. (सर्व निजतात.)

[टिपु चार पांच सरदारांसह प्रवेश करितो.]

टिपु०—वझीर, यही पेसवेकी फौज है ?

वझीर—जी हां हुजूर.

टिपु०—वझीर, कैसे बेहोष पडे है. बदमाश कम अक्ल, ढीले कछोटे, कढीभात खाके सुस्त होके पडे रहे है. जानते नहीं टिपुकुं ? अच्छा वझीर, चुपीचुपीसे उन मरगट्टेका हत्यार पात्यार सबही पसार करना. फेर ये लोग कैसी लढाई करेंगे सो देखलेना. वास्ते तुम हम जाके अव्वल ये काम करना, और वो पेसवा सवाई-माधवरावकूं पकडके अपने हद्दीमे लेना; तो चलो.

[असें ह्मणून मोठ्या सावधगिरीनें त्यांचीं हत्यारों वगैरे चोरून नेतात व पुन्हां लपत लपत येऊन श्रीमंत सवाईमाधवराव पेशवे यांस पळविण्याकरितां टिपु व वझीर त्या ठिकाणीं येतात. आतां श्रीमंतांस नेणार इतक्यांत शिंदे, होळकर, जागे होऊन शिंदे आपल्या खां-

द्यावर श्रीमंतास घेतो व होळकर टिपूस पकडतो.]

शिंदे०—आं, सरकार कुठे हैती. अव दगा हो दगा!
होळकर—दगा मंजी अक्षी घातच जनु ! पन तो चोर
टिपु कुठे हाये ?

शिंदे—आन शीरीमंत कुठे हैती ?

(हें ऐकतांच सर्व प्रधानमंडळ व फौज जागी होऊन,
कुठे आहेत, कुठे आहेत सरकार ? असें ह्मणून एकच गों-
धळ करितात.)

श्रीमंत—अहो शिंदे, तुझीच नाहींका मला आपल्या
खांद्यावर घेतलें आहे. आणि असें काय बोलतां ?

शिंदे—आन सरकार ! पायां पडतो, अन्याय माफ
असावा.

होळकर—सरकार, आतां लढाई कशापाईं कगया
व्होवी. ह्या नव्हका टिपुसुलतान ! मुसंज्यांचें लई पुंडावा
केला.

नाना, बापू—शाबास शिंदे, होळकरहो ! आज
तुझी मराठी राज्याचें सौभाग्य आणि पेशव्यांचा बाणी
राखलीत. सरदार असावे तर असेच असावे. बरें, तो
टिपु कुठे आहे त्याला आणा पाहूं, [त्यास घेऊन
होळकर येतो.]

होळकर—ह्यौ बत्रा सरकार, तो लांडगा टिपु, कसा मारून गरीब झाल्यावाणी दिसतोया.

शिंदे—बग ये टिपु, आतां तुला खायाची न्हाई मिळायच. आमच्या दारामंदी बांधलेल्या टिप्याला आह्मी रोज दोन भाकरी देतो; पण तूं त्येच्यावानी बी इमानी नाहीस. तर तुला कोन खाया देनार हये ?

नाना—करे टिप्या, हरामखोरा माजलासकोर ? काथ पुंडावा हा ! पूर्वीचे दिवस विसरलास वाटते. अंर, तरवारीचीं रक्ते वाळलीं नाहीत तोंच तूं आपल्या जातीवर गेलास. अरे कांहीं तरी स्मरण ठेवावें.

टिपु०—अबे नाना, इसीवक्त मै तेरे हातमे पोंहो-चाहूं सबब तुम कहोगे सोही सच है. लेकिन ये मर्दोका काम नहीं. मुझे छोड दे फेर मेरी करामत देख.

बापू—अरे आग लाव तुझ्या करामतीला, आगांत तितकें सामर्थ्य असतें तर रात्रीचा चोरून कां आला असतास ? तुला काय वाटलें ब्राह्मणांत कांहीं पाणी नाही काय ? दम धर गुलामा, पहा आतां तुला तापल्या तव्धावर भाजून तुझा प्राण घेतो कीं नाही तें.

टिपु०—पैसेवे, तुमारी हमारी बराबरी कैसी होगी ? तुम तां बडे हो; लेकिन दुष्मनोकी जान लेना ये काम

लुगाइका है। बुमसरखिे अकलमंद इनमानके हातसे ऐ-
सा काम नै होगा। अब मै नामर्द, ना उमेइ हूं। आपसे
लाचार हूं। तो मुझे छोड दे। फर ऐसी तकसीर न होगी।
एक वरुत गुन्हा माफ करो। दुष्मनकूं छातीपर रखना।

गायकवाड—कसा बोकडा सागखा दिसतो, अन ह्यन
माजी करामत पहा। देसायासनी मारलें ह्यनून डोंगरावर
चढलास व्हई. अकल न्है तुला ! बामनास्नीं तरास दि-
ला या न्है.

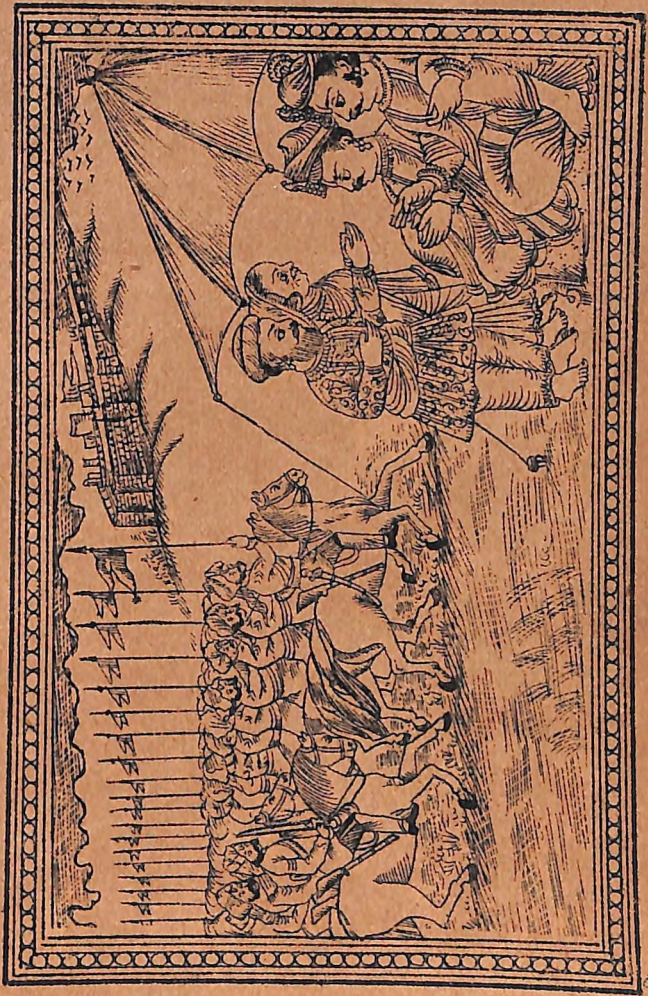
श्रीमंत—याची आतां क्षमा करून उपयोग नाहीं।
किती पांया पडला तरी शेवटीं जातीवर जाणारच. ह्या
हरामखोराचे हाल हाल करून प्राण घेतला पाहिजे.
गुलामानीं ब्राह्मणाला बाटविलें नाहीं ?

[इतक्यांत टिपुची आई येते.]

अमा—अजी पेसवे साहेब, मेरे बच्चेकूं छोडदेव. ये
मेरा बच्चा नहीं आपका बच्चा है उसकूं छोड देव.

नाना—ह्याताच्ये, तूं कशाला आलास हिकडे ? तुझा
मुलगा फार गृणी पडला, तेव्हां अतां त्याला सोडाय-
चा नाहीं.

ह्याता०—अरे टिपु, नानासाहेबके पांव पड तो तेरी
जान बचेगी. नै तो नाहाक मरेगा.



टिपु०—मा इस वक्त एक दफै नै दस दफै पांव प
 डूंगा. पेसवे, बस हुवा. अब मुझे माफ करो तकसीर.
 तुमारे पांव पडतां हूं.

ह्यातारी०—मेरे तर्फ देखना पेसवे, मै तुह्यारी गिरफ-
 दारहूं. मेरे बच्चेकूं छोड देव.

नाना०—असें पाया पडूं लागलें कीं पोटात दया येते,
 काय करावें ? श्रीमंत, कसें काय ? हुकूम होईल त्याप्र-
 माणें करायचें. पण मला असें वाटतें, तों आतां गरीब
 होऊन पांया पडूं लागला आहे, तर शरण आल्याला
 मरण देऊ नये. आतां आपल्या मनास वाटेल तसा तह
 करून घ्यावा ह्यणजे झालें. कां बापू कसें ?

बापू—मलाही तेंच ठीक दिसतें. पण तह करण्यांत
 त्याला दहशत बसली पाहिजे ह्यणजे झालें.

श्रीमंत—बरे तर, सर्वांच्या मतावाहेर माझे मत मु-
 ल्कीच नाही. त्याला जर तहांतील बाबी कडूल झाल्या
 तर करण्याला हरकत दिसत नाही. पण पुन्हां त्यांन
 असा पुंडावा करूं नये असा बंदोबस्त झाला पाहिजे.

नाना—ठीक आहे, तो सर्व बंदोबस्त मी करतों.
 (टिपुकडे वळून) टिपु, आजपर्यंत तूं पेशव्यांचे अन्या-
 य पुष्कळ केलेस; परंतु तुझ्या ह्यातारीच्या सबळ पुण्या-

इनें आजपर्यंत तूं आमच्या हातून वांचलास. इतकें असूनही पुन्हां पुन्हां श्रीमंतांच्या मनांत तुझ्या विषयी दया उत्पन्न होते व आजही तुला सोडण्याचा ते विचार करीत आहेत. परंतु आतां तुला चांगली दहशत बसलीच पाहिजे, एरवीं तुझी खोड जाणार नाही ह्मणून आज ज्याप्रमाणें तहनामा करून मागतों, त्या तहांतील सर्व रकमा जर तुला मान्य असतील तर तूं आज जिवंत सुटला जाशील.

टिपु०—अबे नाना, तेरी कुदरत कुच और है; लेकिन मैबी तेरेसरीखा अकलमंद हूं; मगर इनसानमें वखतपर नजर देना जरूर है. वास्ते, अभी जो तूं मेरेसें करार कर लयेगा इसमें राजीहूं.

नाना०—बापू, ठरल्याप्रमाणें तहांतील बावती सांगा पाहूं ?

बापू—ऐकरे टिपु, जर तुला प्राणांशी आशा असेल तर तुझ्या राज्यांतील चौथाई आणि सरदेशमुखी हे दोन्ही हक्क आम्हाला मिळाले पाहिजेत. बाव २—नरगुंदकर देसायास तूं विनाकारण ठार मारलेंस आणि सर्व देश लुटून फस्त केलास, व ब्राह्मणांचे फार हाल केलेस या घोर कृत्याबद्दल रयतेची नुकसानी भरून देण्याक-

रितां ९ लक्ष रुपये दिले पाहिजेत. बाब ३—नरगुंद-
च्या किल्यावर अर्थाअर्था तुझा संबंध नसूनही तूं अक-
स्मात जाऊन बंडावा केलास येवढ्याकरितां तुझ्या रा-
ज्यापैकीं आमच्या सरहद्दीवर असलेल्या किल्यांतील
आह्मी मागूं तो किल्ला दिला पाहिजे. बाब ४— इतके
हे अनर्थ करूनही शेवटीं श्रीमंतांना इथपर्यंत येण्याची
तसदी दिलीस येवढ्याकरितां दरसाल २ लक्ष रुपये खं-
डणी आणि स्वारीचा येण्याजाण्याचा खर्च दिला पाहि-
जे. बाब ५— वारंवार तूं असा दंगा करूं नयेस व तु-
जपासून पेशवाई राज्याला पीडा होऊं नये या करितां
तुला आपले दोन मुलगे पुण्यास ओलीला ठेवले पाहिजे-
त. आणि जर तूं इकडे दंगा करशील तर त्या दोन्ही
मुलांच्या प्राणाची आशा सोडली पाहिजे. या गोष्टी
जर कबूल असतील तर तहनामा करून आपल्या नां-
वाचें शिक्षा मोर्तब कर व तो कागद श्रीमंतांचे स्वाधीन
कर. तसेंच वरील बाबतींतील रकमा आतांचे आतां स-
रकारानां पोंचविल्या पाहिजेत. या गोष्टी कबूल अस-
तील तर ठीक आहे, नाही तर प्राणाची आशा सोड.

टिपु—अच्छा है पेसवे, ये करार बिनतकरार हमसे
मौजूद है. अब मुझे छोडो और अपना इकरार पुरा

करो. (कराराप्रमाणें तहनामा लिहून देतो.)

नाना०—टिपु, आज हे तुझ्यावर श्रीमंताचे उपकार आहेत असें समज. जा तुला आतां सोडून दिला आहे. पुन्हां जर आतां दंगा करशील तर मात्र पेशव्यांच्या तरवारी पाणीदार आहेत किंवा नाहीत हें तुला कळेल.

(टिपूस सोडतात.)

टिपु०—(मिशावर हात देऊन) अच्छा पैसे, अबी तुमारी कुदरत देख लेएगा ?

शिंदे—अर जा मुसंज्या ! कुतऱ्यावाणी कां गुरगुरतोस ? जा आपल्या कायकापोरास्नी भेट.

(टिपु निघून जातो.)

श्रीमंत—कां नाना ? ही मोहीम तर आपली फत्ते झाली; पण एवढें वाईट वाटतें कीं आपण त्याला जिवंत सोडला.

बापू—सरकार, जिवंत काय आणि मेला काय सांखाच आहे ! मुद्दाम मारावयास कशाला पाहिजे.

नाना०—माझ्या मते झालें तेंच ठीक झालें. लढाई करून हजारां लोकांचे बळी ध्यावयाचे त्यापेक्षां सुंठीवांचून खोकला गेला हें फार चांगलें. बरें श्रीमंत, आप-

ख्याला परदेशाची संवई नार्ही; आाणि या ह्यैसूर प्रांता-
ची हवा फार वाईट आहे व बरसातही जवळ आली
आहे तर मोरचा फिरविण्यास हुकूम व्हावा.

श्रीमंत—ठीक आहे, निघण्याची तयारी करा.

[सर्व जातात.— पडदा पडतो.]





‘हतीमताई’च्या धर्तीवर रचिलेली
 नवीन हिंदु कादंबरी.
 किंमत सवा रूपया. टपालखर्च दोन आणे.



अथवा
 इंग्लिश लोकांनी कोणत्या रीतीने एतदेशियांस
 वागाविले असतां त्यांच्या राज्याला
 अधिक बळकटी येईल.
 किंमत आठ आणे, टपालखर्च एक आणा.
 चिड्डल संभाजी मूरकर.
 दुर्गादेवीची गल्ली, मरगांव पोष्ट, मुंबई.